

जीवन साधना के व्यावहारिक पंचशील

धर्म, विज्ञान और सफलता का अद्भुत संगम — क्रान्तिधर्मी साहित्य (अध्याय ५) पर आधारित।



वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।” — पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के सं

— वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —

“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में रहेगा। वादिगा ने झूठा ही कहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को क्रान्तिधर्मी साहित्या कि में ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य प्रयास १ के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

युग के अनुसार साधना का स्वरूप

प्राचीन काल – यम-नियम

सत्य,
अहिंसा,
ब्रह्मचर्य,
अस्तेय,
अपरिग्रह।



उद्देश्य: कठोर तप और योग सिद्धि के लिए उपयुक्त।

वर्तमान युग – पंचशील

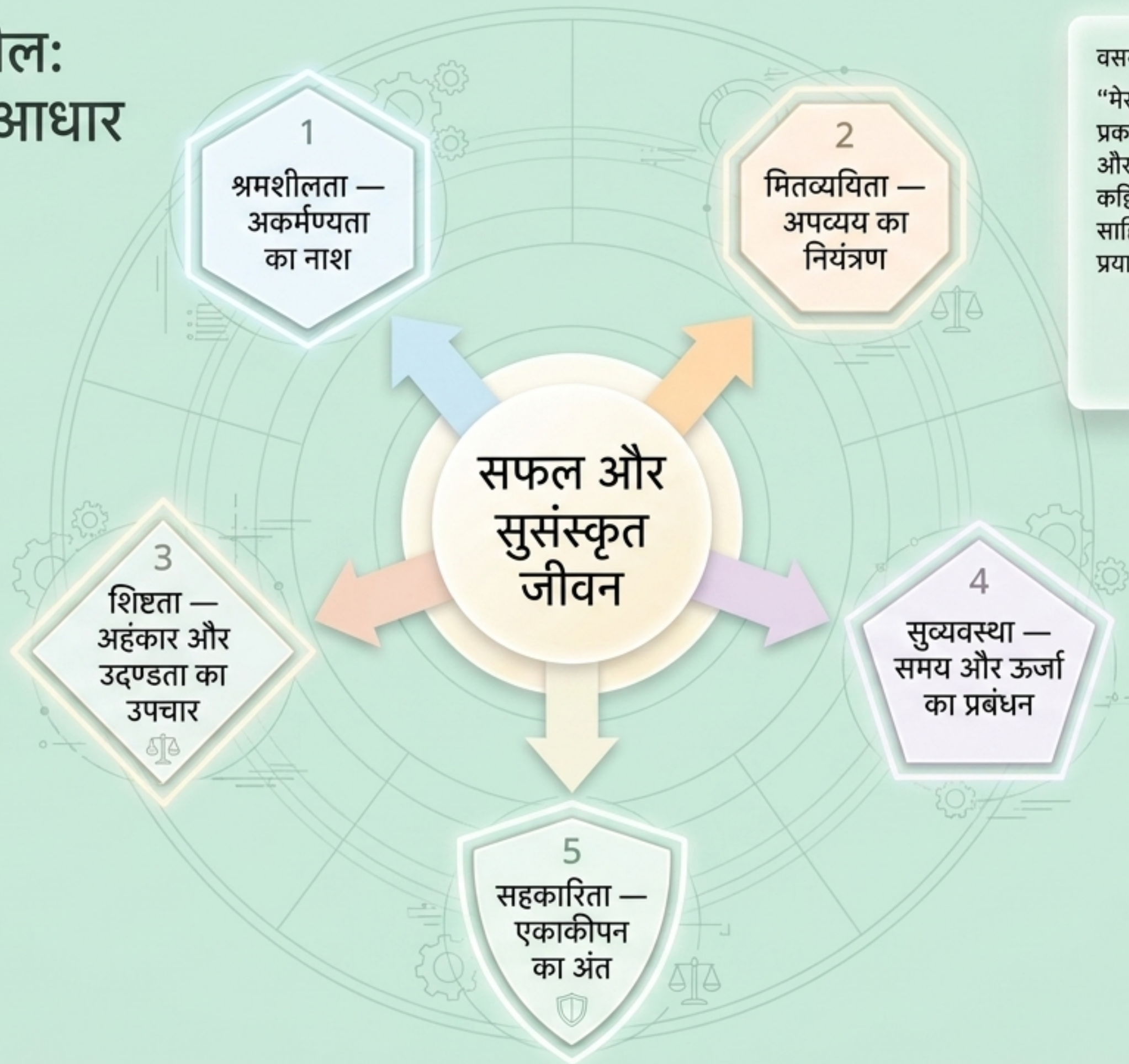
श्रमशीलता,
मितव्ययिता,
शिष्टता,
सुव्यवस्था,
सहकारिता।



उद्देश्य: आज के व्यावहारिक, पारिवारिक और सामाजिक जीवन में सफलता हेतु।

आज की भागदौड़ भरी जिंदगी में ये ५ व्यावहारिक सूत्र ही प्राचीन तप-साधना के समतुल्य हैं।

व्यावहारिक पंचशील: जीवन उत्कर्ष का आधार



वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —
“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ
पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य
(गायत्री परिवार के संस्थापक)

प्रथम शील: श्रमशीलता

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही

जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही
आलस्य, प्रमाद और विलासिता ने
मनुष्य को अक्षम बना दिया है।
श्रम के बिना न शरीर नीरोग रह
सकता है और न ही किसी प्रकार
का उत्पादन संभव है।

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति

(गायत्री परिवार के संस्थापक)

Choices & Consequences

A

B

कामचोरी /
हरामखोरी

तन्मयता भरा
परिश्रम

शारीरिक और
मानसिक अवनति

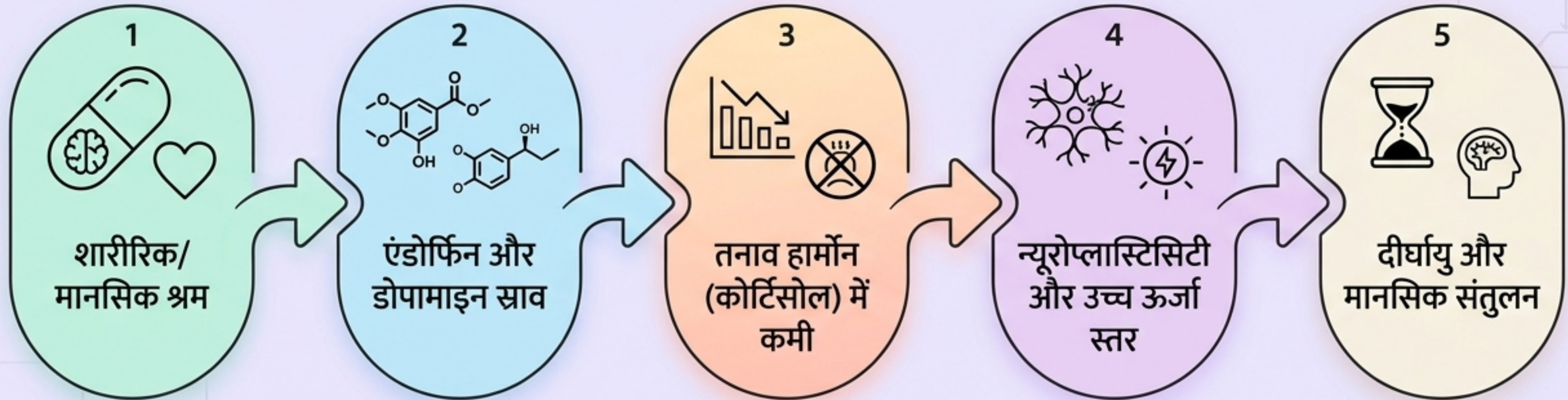
निरंतर
प्रगतिशीलता

आर्थिक पतन

श्रेष्ठ सत्परिणाम

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”
— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

श्रमशीलता का वैज्ञानिक दृष्टिकोण

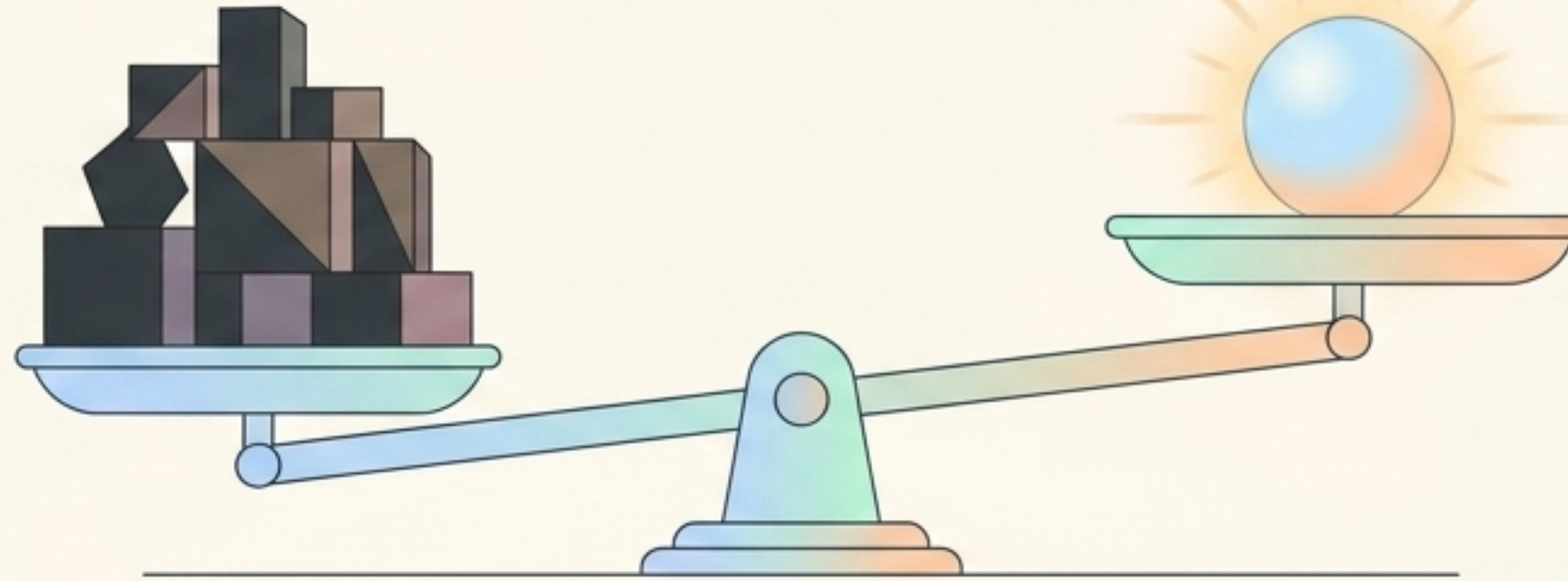


शरीर का डिज़ाइन विश्राम के लिए नहीं,
सक्रियता के लिए हुआ है।

द्वितीय शील: मितव्ययिता

व्यसन, फैशन और आडंबर
(दिखावा केवल ईर्ष्या उपजाता है, सम्मान नहीं)

सादा जीवन, उच्च विचार
(सादगी से अर्जित सम्मान)



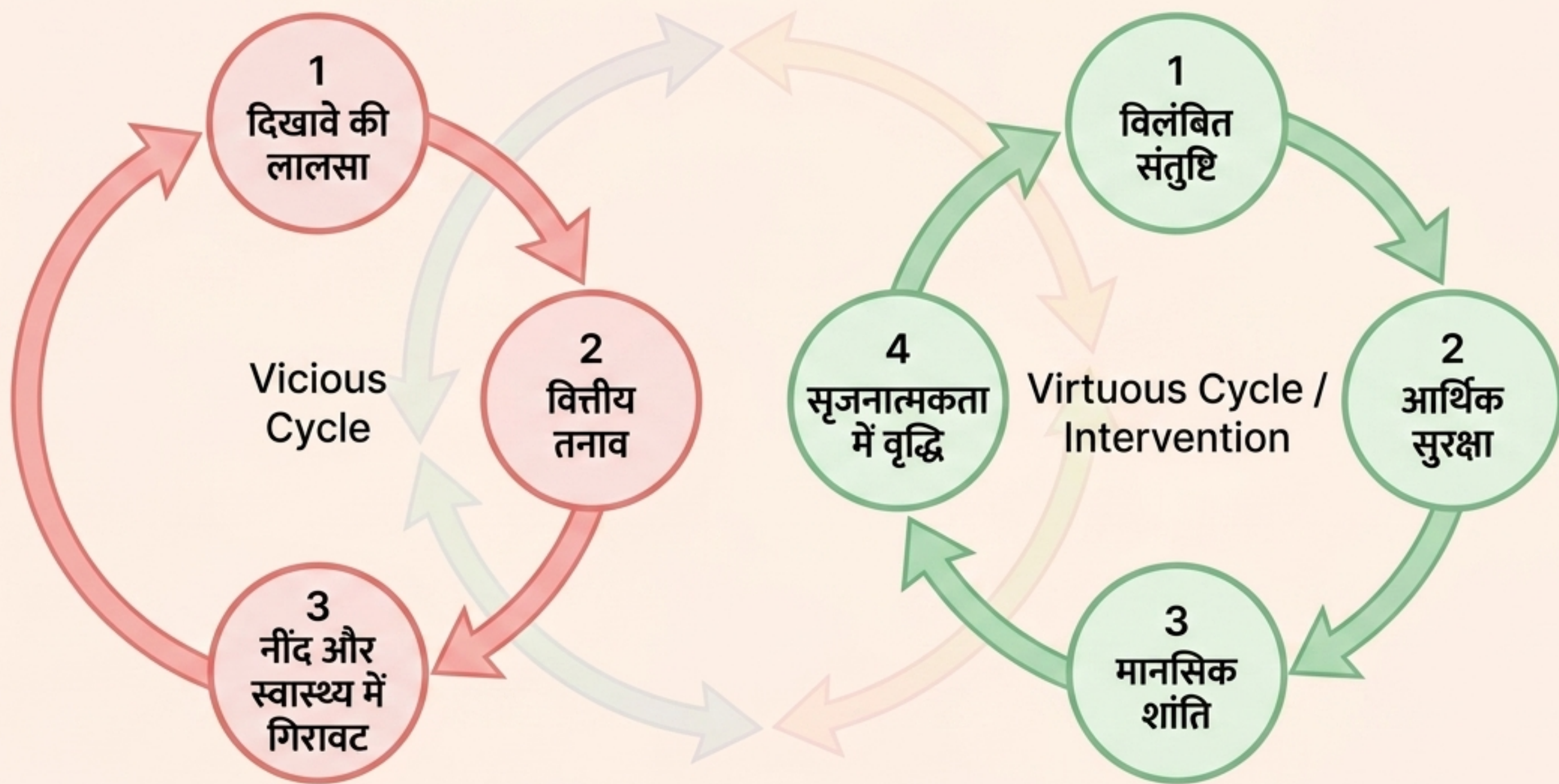
अपव्यय आज का दूसरा सबसे बड़ा अभिशाप है। अपनी कमाई का वह हिस्सा जो व्यसनों में नष्ट होता है, उसे उसे बचाकर समाज के महान उद्देश्यों में लगाएँ। उदारता तभी संभव है जब कुछ बचे।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”
— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे बच्चों से कहियेगा कि “मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

मितव्ययिता का मनोवैज्ञानिक विज्ञान



तृतीय शील: शिष्टता

अशिष्टता = अहंकार + दूसरों का असम्मान
(अपनों को भी पराया कर देती है)।



शालीनता बिना मोल मिलती है,
परन्तु उससे सब कुछ खरीदा जा सकता है।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —
“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

शिष्टता = विनम्रता + सौमनस्य

एक शालीन व्यक्ति बिना किसी अतिरिक्त प्रयास के मित्रों और सहयोगियों की एक पूरी फौज खड़ी कर लेता है।

शिष्टता का सामाजिक न्यूरोबायोलॉजी

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का गलतश जन्म-जन्म के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आबसे कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साथ में जन-मुक्तिको चाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगप्रदमूर्ति तपोनिष्ठ श्रीराम शर्मा आचार्य

(गायत्री परिवार के संस्थापक)



मधुर और
विनम्र
व्यवहार

मिरर न्यूरोन्स
का सक्रिय
होना

ऑक्सीटोसिन
का स्राव /
Trust हार्मोन

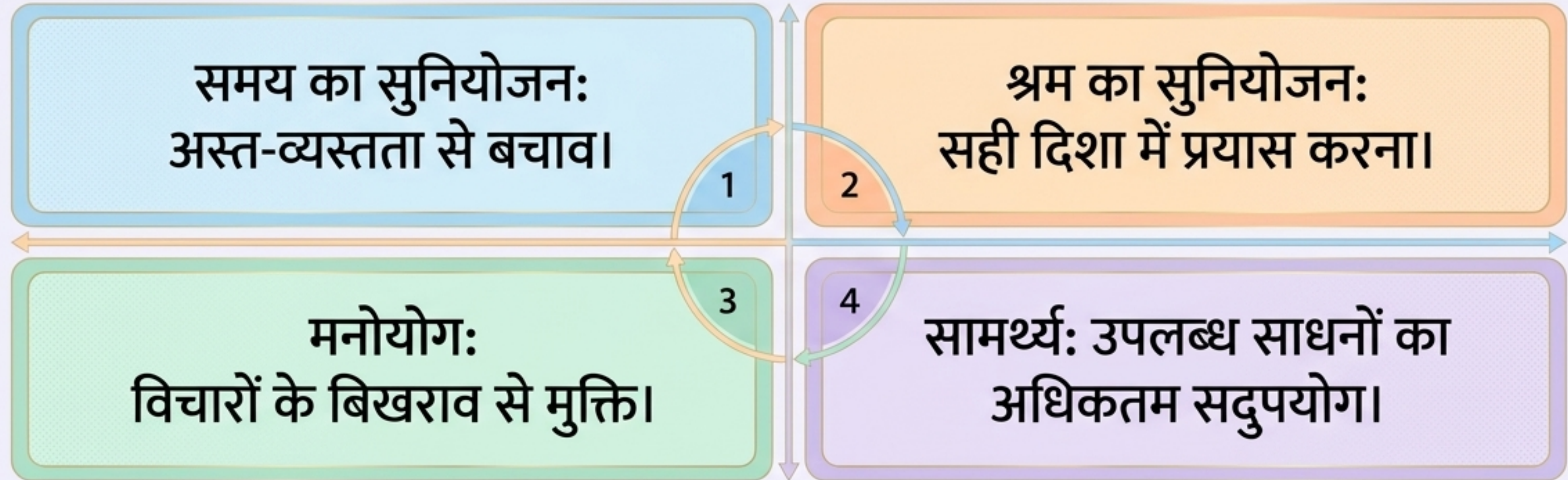
रक्षात्मक
दृष्टिकोण में
कमी

गहरे और
स्थायी संबंधों
का निर्माण

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा – सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।” – पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

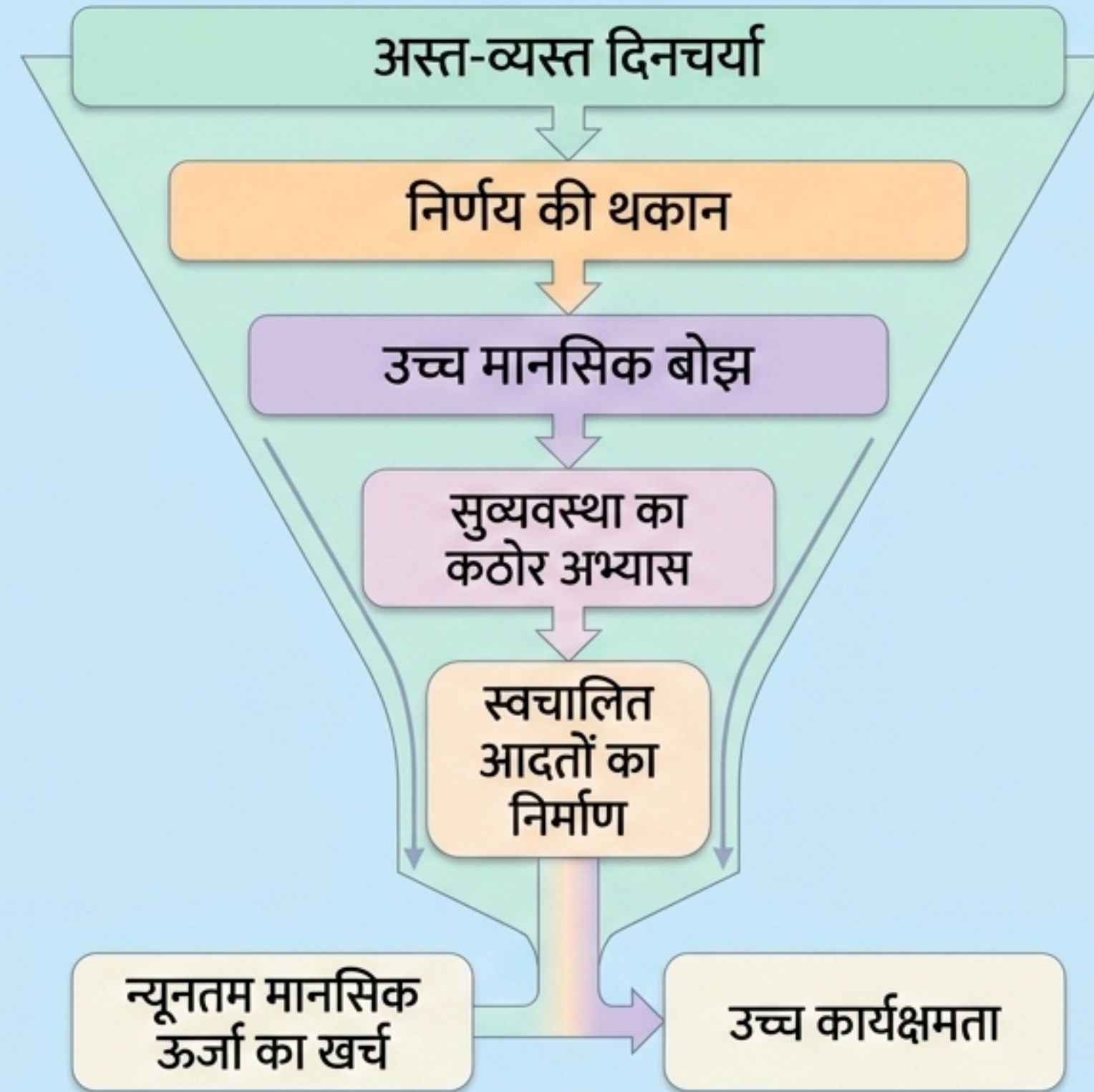
चतुर्थ शील: सुव्यवस्था

सुनियोजन ही सौन्दर्य है, वही कला-कौशल है।



मैनेजर या सुपरवाइजर के प्रतिष्ठित पद उसी को मिलते हैं जो पहले स्वयं को अनुशासित करता है।

सुव्यवस्था का संज्ञानात्मक विज्ञान



वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।” — पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के)

पंचम शील: सहकारिता

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —

“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान सबसे कहियेगा रूमें जन-जनें [र्] साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य
(गायत्री परिवार के संस्थापक)

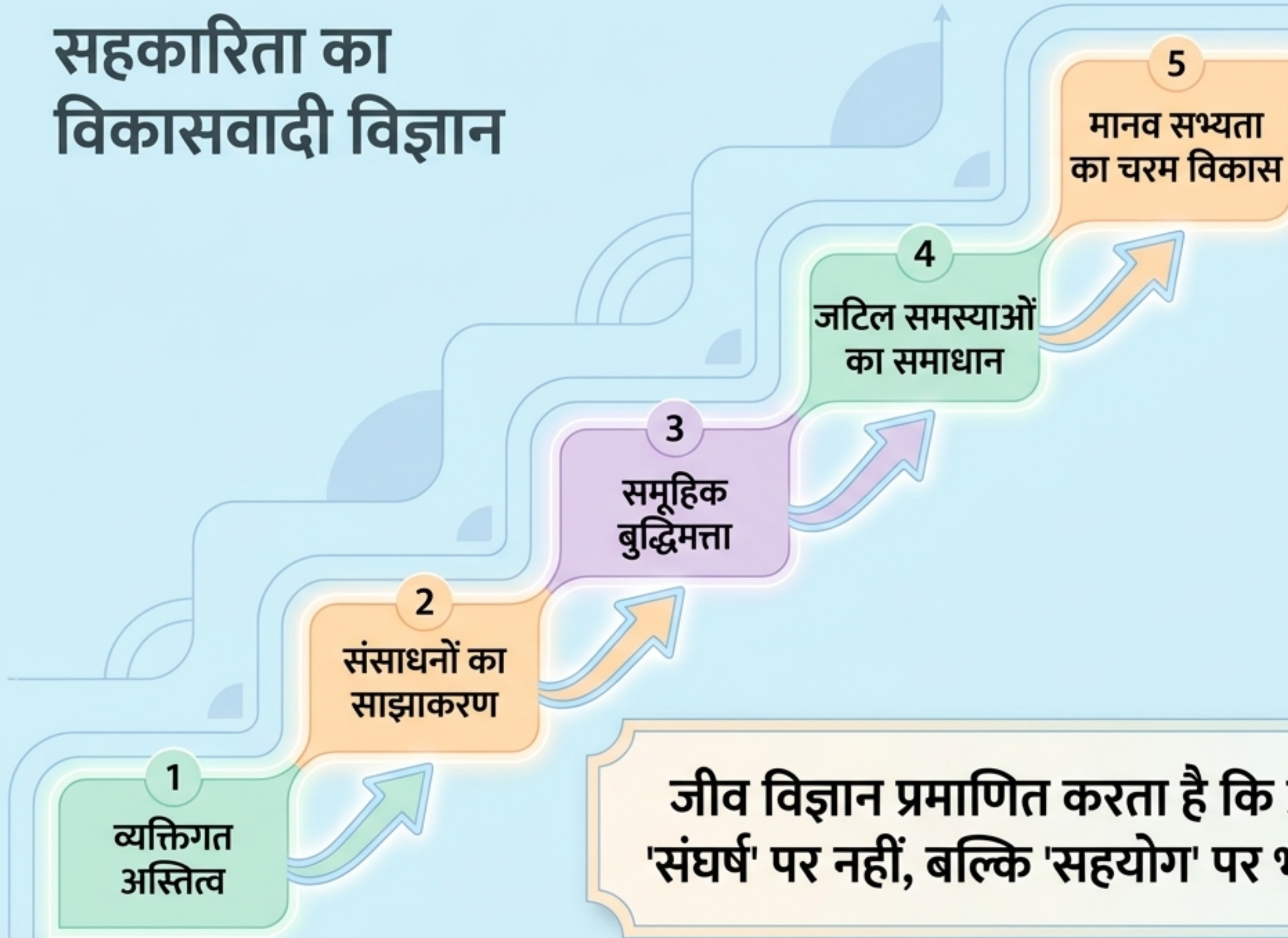
एकाकीपन और संकीर्ण स्वार्थपरता पतन का मार्ग हैं।
बड़े कार्य संयुक्त शक्ति से ही सम्पन्न होते हैं।

देव शक्तियों के सहयोग और अंशदान से
ही माँ दुर्गा का प्रादुर्भाव हुआ था।



बिना सहकारिता के न तो कोई संस्था पनपती है,
न ही कोई व्यवसाय प्रगति करता है।

सहकारिता का विकासवादी विज्ञान



वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —

“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

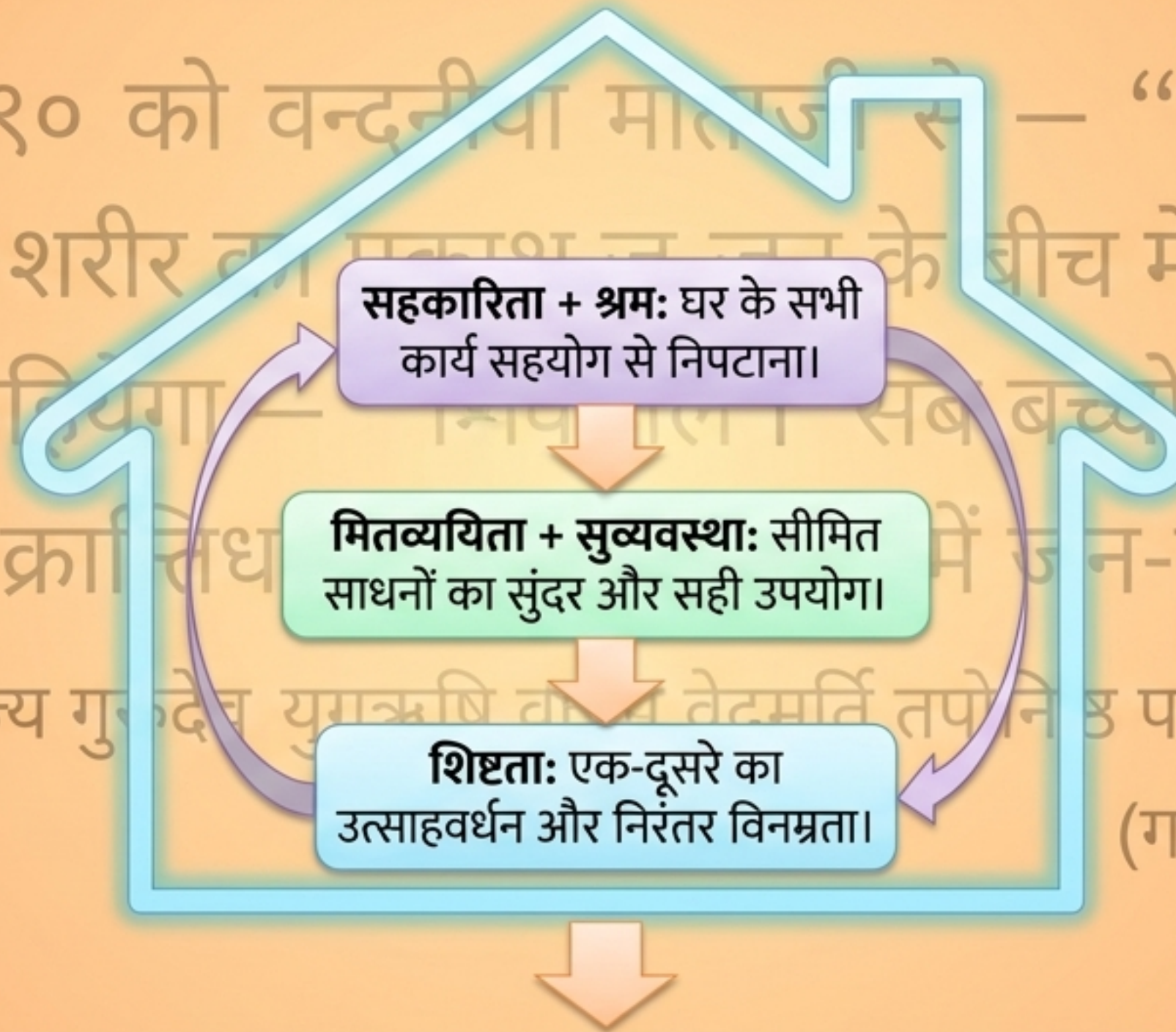
— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति
तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य
(गायत्री परिवार के संस्थापक)

जीव विज्ञान प्रमाणित करता है कि डार्विन का सिद्धांत केवल 'संघर्ष' पर नहीं, बल्कि 'सहयोग' पर भी गहराई से आधारित है।

परिवार: नर-रत्नों की खदान

इन ५ महान सद्गुणों को आचरण में उतारने का सबसे उत्कृष्ट अवसर अपने परिवार के बीच ही मिलता है।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर को अपने परिवार के बीच में पहुँचाना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — ज्ञान शरीर को मेरे क्रांतिधारा में जन-जन तक पहुँचने का प्रयास करें।” — पूज्य गुरुदेव युगगुरु तपस्वि महाराज पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)



यही स्वल्प परिवर्तन एक साधारण परिवार को महामानवों के निर्माण की टकसाल बना देता है।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप –सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।” — पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

हँसती-हँसाती, उठती-उठाती जिंदगी का रहस्य

धर्म केवल कथा-प्रवचन सुनने में नहीं है, बल्कि उसे आचरण में धारण करने में है।
व्यायाम के बिना कोई पहलवान नहीं बन सकता; उसी प्रकार, इन पंचशीलों को
व्यवहार में लाये बिना जीवन सफल और सुसंस्कृत नहीं हो सकता।

मानवीय गरिमा के अनुरूप आज ही इस ५-सूत्रीय मर्यादा का
पालन शुरू करें और अपने वातावरण को धन्य बनाएँ।